www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2023) वर्ष 3, अंक 2, 4-6

Article ID: 253

दक्षिण पश्चिम अर्ध शुष्क क्षेत्र उत्तर प्रदेश में मटर की खेती

शारदा शरण*, वीरेन्द्र सिंह, सोनिया*****

*एमएससी, शस्य विज्ञान,
**पीएचडी स्कॉलर, सस्य विज्ञान,
राजा बलवंत सिंह कॉलेज,
बिचपुरी आगरा, (उत्तर प्रदेश)
***पीएचडी स्कॉलर, सस्य विज्ञान,
लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी,
फगवाड़ा, (पंजाब)

मटर विश्व की दलहन फसल है। इसका प्रयोग सब्जी एवं दाल दोनों ही रूप में किया जाता है। सूखी मटर को दलकर दाल एवं सूप के रूप में प्रयोग किया जाता है। ताजे हरे दानों को उस समय प्रयोग में लाते हैं जब बाजार में ताजी मटर उपलब्ध नहीं होती मटर के दानों को सुखाकर चार्ट के रूप में खाया जाता है। मटर के सूखे दानों में 22 प्रतिशत प्रोटीन होती है। और ताजे हरे दानों में भी प्रोटीन की पर्याप्त मात्रा 7.2 प्रतिशत होती है। भारत में मटर की खेती लगभग 7 लाख हेक्टेयर में की जाती है। जिससे 6 लाख टन का उत्पादन होता है। भारत में मटर और उगाने वाले राज्यों में उत्तर प्रदेश का प्रथम स्थान है। देश में मटर कुल उत्पादन का लगभग 60 प्रतिशत उत्तर प्रदेश में ही होता है। उत्तर प्रदेश में 4.5 लाख हेक्टेयर में मटर की खेती होती है। जिससे 5.68 लाख टन उत्पादन होता है मटर उत्पादन में क्षेत्रफल की दृष्टि से आगरा मंडल का प्रथम स्थान है प्रदेश में आगरा एवं अलीगढ़ जिले में मटर क सबसे अधिक क्षेत्रफल में की जाती है।

जलवायु

जलवायु मटर की खेती के लिए शुष्क एवं ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है। मटर के बीज अंकुरण के लिए 22 डिग्री सेल्सियस तापमान उचित रहता है। पौधों के उचित विकास एवं अच्छी पैदावार के लिए औसत मासिक तापमान 13 डिग्री सेल्सियस से 18 डिग्री सेल्सियस तापमान उचित रहता है।

भूमि

भूमि मटर की खेती सभी प्रकार की भूमियों में की जा सकती है। लेकिन दोमट और भारी मृदा इसके लिए सर्वोत्तम रहती है। इसकी खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली बलुई मृदा जिसका पीएच मान 6.5-7 मटर की खेती के लिए उपयुक्त होता है।

खाद तथा उर्वरक

मटर की फसल के लिए मिट्टी परीक्षण के आधार पर संतुष्ट उर्वरक भूमि में मिलाए, मध्यम उर्वरा शक्ति की भूमि में 200 कुंटल गोबर की खाद, 45 किलोग्राम यूरिया, 250 किलोग्राम एस एस पी एवं 20 किलोग्राम पोटाश अवश्य डालना चाहिए।

मटर की उन्नत प्रजातियां

सब्जी वाली प्रजातियां	**दाल मटर की प्रजातियां**
आर्केल, टाइप-19, 56, जवाहर मटर, एनपी-29, मधु, अर्लिबेजर	रचना, स्वर्णरेखा, पंत मटर 5, हंस, टाइप-163

बीज उपचार

स्वस्थ्य बीजों को बुवाई के पूर्व थिमेट 2.5 ग्राम पर किलोग्राम से उपचारित करें। इसके पश्चात बीजों को 200 ग्राम राइजोबियम कल्चर एवं 200 ग्राम पीएसबी कल्चर प्रति किलोग्राम बीज की मात्रा उपचारित का बुवाई करें।

बुवाई का समय

मटर की फसल में असिंचित अवस्था में खेत में नमी उपलब्ध रहने पर अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से नवंबर के प्रथम सप्ताह तक बुवाई करें। सिंचित अवस्था में नवंबर के प्रथम सप्ताह से अंतिम सप्ताह तक बुवाई की जा सकती है। ज्यादा विलंब से बुवाई करने पर कीट व्याधि का प्रयोग प्रकोप होता है इसलिए समय पर बुवाई करें।

बीज की मात्रा एवं बुवाई की विधि

मटर की बुवाई सीडड्रिल से करें बुवाई करते समय कतार से कतार की दूरी 30 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। प्रति हेक्टेयर 75 से 100 किलोग्राम बीज बोना चाहिए। बीज को 4-5 सेमी की गहराई पर बोना चाहिए।

सिंचाई एवं जल निकास

मटर की खेती को जल की आवश्यकता नहीं पड़ती यदि मटर की बुवाई पलेवा करने के पश्चात उचित नमी में की गई है तो पहली सिंचाई फूल निकलते समय करनी चाहिए खेत में कहीं भी जल इकट्ठा ना होने पाए। अतः मटर के खेत में जल निकास की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे अनावश्यक जल को बाहर निकाल सके। यदि शीतकालीन वर्षा ना हो तो फलियों में दाना बनते समय दूसरी सिंचाई कर देनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार प्रकोप से मटर की उपज घट जाती है मटर की बुवाई से 45 से 60 दिन तक खरपतवार मुक्त रहना आवश्यक है। बुवाई के 25-30 दिन बाद एक निराई गुड़ाई करने से उपज में वृद्धि होती है। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए बुवाई के तुरंत बाद पेंडामेथलीन 30 EC का 4-5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 700-800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई से पहले खेत में अच्छी तरह मिलाकर देने से खरपतवार नियंत्रण में रहते हैं।

फसल सुरक्षा

रोग नियंत्रण

बुकनी रोग- पत्तियां, फलियां तथा तने पर सफेद चूर्ण सा फैलता है और बाद में पत्तियां काली होकर मरने लगती है। इस रोग की रोकथाम के लिए अवरोधी किस्मों का प्रयोग किया जाए। और घुलनशील 3 किलोग्राम गंधक को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

गेरूई-: इस रोग में पौधों के वायवीय भागों में पीले रंग के गोल व लंबे धब्बे समूह में बनते हैं बाद में इनका रंग काला हो जाता है। इस रोग की रोकथाम करने के लिए डाईथेन M-45 का छिड़काव करना चाहिए।

कीट नियंत्रण

पत्ती में सुरंग बनाने वाले कीट- इस कीट का आक्रमण पौधों की प्रारंभिक अवस्था में ही शुरू हो जाता है। इसकी गिडारे पत्तियों में सुरंग बनाकर कोशिकाओं को खाती हैं। यह सुरंग पत्तियों पर दिखाई देती है। इसकी रोकथाम हेतु फसल पर सायपरमेथेन 1.5 लीटर दवा को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

फली छेदक कीट-: देर से बोई गई फसल पर इस कीट का आक्रमण बहुत होता है। इस कीट की सूंडी फलियों में छेद कर उनके अंदर पूर्णता प्रवेश कर दानों को खाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए 5% मेलाथियान 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर का बुरकाव करें।

तना छेदक-: यह काले रंग की मक्खी होती है इसकी सूंडी प्रारंभ फसल को अंदर से खाती रहती हैं । जिससे पौधे सूख जाते हैं इस कीट की रोकथाम के लिए 5% मेलाथियान 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव करें।

कटाई तथा मड़ाई

दानों के लिए बोई गई किस्मों मार्च तक पक कर तैयार हो जाती है पकी हुई फसल की कटाई शीघ्र कर लेनी चाहिए। अन्यथा खेतों में दाने गिर जाने की संभावना रहती है। मड़ाई बेलों द्वारा दाएं चलाकर या थ्रेसर से की जा सकती है।

उपज एवं भंडारण

मटर की उपज किस्म बोने के समय और नमी की

उपलब्धता पर निर्भर करती है। सामान्य तौर पर दानों की उपज 20 से 25 कुंटल तथा भूसी की उपज 30-35 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। ताजी बिना छिली हुई फलियों को 90 से 95% आर्द्रता के साथ 0 डिग्री ताप पर 2-3 सप्ताह तक भण्डारण किया जा सकता है। भण्डारण कीटों की से रक्षा हेतु एल्युमिनियम फॉस्फोर्ड 3 गोली प्रति मिलियन टन की दर से प्रयोग की जाए।